

समाज विकासमाला

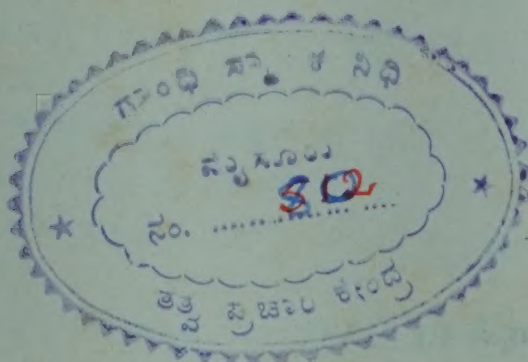
अमरनाथ

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : १०६

अमरनाथ

काश्मीर के एक महान तीर्थ का परिचय



लेखक
यशपाल जैन

सम्पादक
यशपाल जैन

१६५६

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सुरेंद्र प्रिंटर्स प्रा० लि०,
डिप्टी गंज, दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

आपने इस माला में बहुत-से तीर्थों की यात्रा की है। इस पुस्तक में काश्मीर के एक महान तीर्थ के दर्शन कर लीजिए।

आप देखेंगे कि इस तीर्थ की अपनी महिमा है। न वहां कोई मंदिर है, न ऊंचे-ऊंचे पेड़। वहां विशाल पर्वत हैं और एक पर्वत में गुफा है, जिसमें बर्फ से अपने-आप एक बहुत बड़ी शिवपिण्डी बन जाती है। उसे देखकर हमारे देश के धार्मिक लोग ही नहीं, विदेश के यात्री तक चकित रह जाते हैं।

इस तीर्थ की जितनी महिमा है, उतनी ही वहां के प्राकृतिक दृश्यों की भव्यता है।

आप वहां की यात्रा एक बार अवश्य करें। जाने से पहले वहा का आनंद इस पुस्तक को पढ़कर ले लें।

—सम्पादक

अमरनाथ

: १ :

काश्मीर में वैसे तो छोटे-बड़े बहुत-से तीर्थ हैं, लेकिन जो महिमा अमरनाथ की है वह और किसीकी नहीं है। वहां जाने में ऊंचे-ऊंचे पहाड़ लांघने पड़ते हैं, नदियां पार करनी पड़ती हैं बरफ़ पर चलना पड़ता है और भयंकर ठंड का सामना करना पड़ता है, फिर भी उस धाम में कुछ ऐसा खिंचाव है, कुछ ऐसी भव्यता है कि यात्रा के दिनों में हजारों लोग वहां जाये बिना नहीं रहते।

अमरनाथ की यात्रा सावन के महीने में होती है। देश के कोने-कोने से नर-नारी आ-आकर श्रीनगर में जमा हो जाते हैं और बड़े उत्साह के साथ हजारों साधू-संतों और यात्रियों की 'छड़ी' वहां से रवाना होकर, रास्ते में दूसरे तीर्थ करती हुई, पूरनमासी के दिन अमरनाथ पहुंचती है।

पाठकों को पता होगा कि काश्मीर जाने के लिए पठानकोट तक रेल है। उसके बाद बस या कार से श्रीनगर जाना होता है। हमारी टोली सितम्बर के महीने

में श्रीनगर पहुंची। पहुंचते ही लोगों ने सलाह दी कि पहले अमरनाथ हो आओ। एक महीने की देर तो वैसे ही हो चुकी थी, और देर होने पर ठंड बढ़ जाने का डर था। अगर बरफ़ गिर गई तो रास्ता भी बंद हो सकता था। इसलिए हम लोग दो दिन श्रीनगर में थकान मिटाकर पहलगाम पहुंचे। श्रीनगर से पहलगाम २१ मील है। बसें चलती हैं। रास्ते में 'मटन' नाम का तीर्थ मिला। 'मटन' मार्तण्ड का बिगड़ा रूप है। वहां सूर्य का मंदिर होने के कारण उसका यह नाम पड़ा। इस तीर्थ का वही महत्व है, जो बिहार के गया तीर्थ का है। बीसियों पंडे वहां रहते हैं। जैसे ही बस रुकती है, अपनी-अपनी बहियां लेकर आ जाते हैं और बिना कुछ लिये पीछा नहीं छोड़ते।

यहां का मंदिर बड़ा पुराना है। कहते हैं, पांचवीं सदी में रामादित्य नाम के राजा ने उसे बनवाया था। वहांपर एक झरना भी है, जिसका पानी तन्दुरुस्ती के लिए बहुत अच्छा समझा जाता है। कुल मिलाकर जगह बड़ी सुन्दर है।

मटन से पहलगाम तक चढ़ाई-ही-चढ़ाई है। शोर मचाती हुई, पूरा जोर लगाती हुई बस 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस', वाली कहावत सिद्ध करती है।

पहलगाम छोटी-सी,पर बड़ी ही मनोरम जगह है।

लिदर घाटी में नदी के किनारे पर बसे होने के कारण उसकी शोभा निराली है। चारों ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़, जिनपर चीड़ और देवदार के हरे-भरे पेड़, छोटा-सा बाजार, डाकखाना, तारघर और सरकारी अस्पताल। यहां की आबहवा बड़ी अच्छी है। इसलिए गर्मियों में यहां काफी भीड़ हो जाती है। समुद्र से ७२०० फुट की ऊंचाई पर होने के कारण श्रीनगर की-सी गर्मी यहां नहीं रहती, सुहावनी सर्दी रहती है।



पहलगाम का बाजार

पहलगाम पहुंचकर ठहरने का डौल करके जब अमरनाथ के बारे में पूछताछ की तो लोगों ने बहुत

डराया। एक ने कहा, "क्या करोगे वहां जाकर ? क्या धरा है वहाँ ? पहाड़ की गुफा में बरफ़ की एक पिण्डी है। उसे देखने के लिए इतनी मुसीबत उठाने की क्या जरूरत है ?" दूसरे ने कहा, "अब वहां जाने का मौसम नहीं रहा। फिर कल पानी पड़ गया है। रास्ता बहुत ही रपटीला हो गया होगा, जाड़े की तो कुछ न पूछो।"

हमने कहा, "और भी लोग तो जायंगे।"

"सो तो ठीक है।" तीसरे सज्जन ने कहा, "लेकिन देखना है कि कितने वहां पहुंच पाते हैं ?"

कुछ ऐसे भी लोग थे, जिन्होंने जाने की सलाह दी। कहा कि परेशान होने की कोई बात नहीं है। जायं और जरूर जायं। हां, इतना है कि पूरा सामान साथ ले जायं, क्योंकि पहले पड़ाव के बाद रास्ते में कुछ नहीं मिलता।

पाठकों को पता होगा कि बस पहलगाम तक ही जाती है। वहां से आगे की यात्रा पैदल या टट्टू पर की जाती है। पहलगाम से अमरनाथ अट्ठाईस मील है।

हम लोगों ने सबकी सुनी, आपस में चर्चा की और सोच-विचार के बाद तय किया कि अमरनाथ अवश्य जाना है। जो होगा सो देखा जायगा।

: २ :

एक दिन तैयारी में लगाया। ओढ़ने-बिछाने के

कपड़े कम थे, सो जुटाये; चार दिन की खाने-पीने की चीजें खरीदीं ; सबके लिए एक-एक टट्टू सवारी का और चार सामान के लिए तय किये; एक तंबू लिया। इस तरह पूरी तैयारी के साथ हमारी टोली अमरनाथ के लिए रवाना हुई। और भी बहुत-से यात्री जा रहे थे। उनमें गुजरात, बंगाल, मद्रास, दिल्ली, मालवा, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि सब जगह के स्त्री-पुरुष थे।

पहलगाम से निकलते ही चढ़ाई शुरू हो जाती



कुछ लोग डांडी पर भी यात्रा करते हैं।

है। पहाड़ों को काटकर पतली-सी पगडंडी बनाई गई

है। उसीपर होकर आगे बढ़ते हैं। कहीं-कहीं तो यह पगडंडी इतनी संकरी हो जाती है कि देखकर दिल कांप उठता है। बाईं तरफ को ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और दाईं ओर को सैकड़ों फुट निचाई पर बहती हुई नदी। इधर एक बात बड़ी मजेदार देखने में आती है। बाईं ओर देखते हैं तो सूखे पहाड़, जिनपर हरियाली का नाम-निशान नहीं। दाईं ओर ऐसा हरा-भरा कि कुछ न पूछो। टट्टूवालों से पूछने पर पता चला कि ऐसा हवा के कारण होता है। यहांपर बड़े जोर के बवंडर आते हैं और पहाड़ों पर से सबकुछ उड़ाकर नदी के किनारे और उधर के पहाड़ों पर ले जाते हैं।

इधर बस्तियां नहीं हैं। बीच-बीच में मक्की आदि के खेत हैं। उनकी रखवाली के लिए इक्की-दुक्की झोंपड़ियां कहीं-कहीं दिखाई दे जाती हैं। यात्रियों को देखते ही इन झोंपड़ियों में से निकल-निकलकर छोटे-छोटे बच्चे रास्ते पर आ जाते हैं और हाथ फैलाकर पैसा मांगते हैं।

हमारी टोली को देखते ही दो लड़कियां दौड़ी आईं। उनके चेहरे फूल से खिले थे और सेब जैसे लाल थे। बड़ी प्यारी लगती थीं वे। सिर के बालों को गूंथ-गूंथकर बीसियों पतली-पतली लटें बनाई गई थीं। देह पर चुगे जैसी गरम फिरन थी। उनका

मांगना और गिड़गिड़ाना अच्छा नहीं लगा।

लिदर नदी का पहला काठ का पुल पार किया तो बड़ा आनंद आया। पुल क्या, लकड़ी के कुछ पटिया डाल लिये जाते हैं। बड़ी सावधानी से उनपर चलना पड़ता है। जरा चूके कि नदी में। लेकिन टट्टुओं के पैर बहुत ही सधे हुए होते हैं। उन्हें छेड़ो नहीं तो वे बड़े आराम से पार करा देते हैं।

रास्ता जितना कसाले का है, उतना ही सुंदर है। नदी की ओर के पहाड़ों पर चीड़, बदलू, अखरोट आदि के घने-घने पेड़ बड़े अच्छे लगते हैं। कहीं-कहींपर उनके बीच से सफेद झरने बहते हुए ऐसे जान पड़ते हैं, मानो किसीने खड़िया से लकीर खींच दी हो।

पहला पड़ाव आता है चंदनवाड़ी। पहलगाम से वह आठ मील है। लेकिन पहाड़ों के आठ मील मैदान के बीस मील के बराबर लगते हैं।

हमारी यात्रा का यह पहला दिन था और पहला भाग। इसलिए उमंग से आगे बढ़ते गये। रास्ते के संकरेपन या कहीं-कहीं ढालों को देखकर डर लगता था, पर तभी निगाह हटकर किसी झरने पर या बरफ का मुकुट पहने पहाड़ की चोटी पर चली जाती थी।

पहलगाम से आगे चलकर लिदर नदी शेषनाग

कहलाने लगती है । वह चंदनवाड़ी और उससे अगले पड़ाव शेषनाग तक साथ रहती है। बीच में थोड़ी देर का जरा अलग होती है कि फिर पास आ जाती है।

चंदनवाड़ी बड़ी बढ़िया जगह है। वहां किसी जमाने में चंदन के पेड़ रहे होंगे, इसलिए उसका यह नाम पड़ा होगा। पर अब तो वहां चंदन का एक भी पेड़ नहीं हैं। दूसरे पेड़ हैं--बहुत घने और ऊंचे। कई झरने यहां बहते हैं। छोटा-सा मैदान है। पहलगाम आनेवाले लोग यहां जरूर आते हैं। खाने-पीने की कुछ चीजें साथ ले आते हैं और दिनभर यहां रहकर शाम को लौट जाते हैं।

इस पड़ाव पर लकड़ी और टीन के कुछ घर बने हैं, जिनमें रात को यात्री ठहर जाते हैं। कुछ दुकानें हैं, एक होटल। उंचाई ६॥ हजार फुट होने के कारण ठंड मजे की रहती है।

पहलगाम से यहांतक आने के लिए मोटर की सड़क बन रही है। उसके तैयार होने पर आठ मील की पैदल-यात्रा कम हो जायगी।

यहींपर सबसे पहले बर्फ़ का पुल मिलता है। शेषनाग की धारा के ऊपर पानी एक जगह जम गया है और बरफ का ऐसा पक्का पुल बन गया है कि उस-

पर होकर भेड़-बकरियां ही नहीं, भारी सामान लादे टट्टू भी पार हो जाते हैं।

हम लोगों ने रात को चंदनवाड़ी से चार मील आगे ज़ोजपाल में ठहरने का विचार किया था, क्योंकि सुना था कि चारों ओर पहाड़ होने के कारण वहां हवा तेज नहीं चलती और सर्दी कम रहती है।

चंदनवाड़ी में थोड़ी देर रुककर आगे बढ़े। शेषनाग नदी फिर साथ हो गई। कुछ दूर जाने पर दो घाटियां पार करनी पड़ीं। पहली थी 'जुआं घाटी', दूसरी 'पिस्सू घाटी'। जिस तरह जुएं और पिस्सू आदमी को हैरान करते हैं, उसी तरह ये घाटियां यात्रियों को हैरान करती हैं। शायद इसीलिए इनके ये नाम पड़े हैं। दोनों में से हरएक कोई एक-एक मील लम्बी होगी। रास्ता बड़ा ही ऊबड़-खाबड़ और चक्करदार है। सामने की उंचाई और पीछे की निचाई, दोनों ही को देखकर दिल बैठता है। टट्टुओं को जरा-जरा-सी दूर पर सांस लेने के लिए रुकना पड़ता है। घाटियां पार होते-होते वे पसीने से लथपथ हो जाते हैं, मानो नदी की धारा में डुबकी लगाकर आये हों। उनकी पीठ पर बैठे सवार भी बेहाल हो जाते हैं।

लेकिन अच्छी बात यह है कि दोनों ही घाटियां खूब हरी-भरी हैं। बदलू, फुलमाछ और भोजपत्र के

पेड़ों से रास्ते की भंयकरता बहुत-कुछ कम हो जाती है।

टट्टू-वालों ने बताया कि पहले यहीं कहीं से एक दूसरा रास्ता अमरनाथ को जाता था। वह बड़ा कठिन और बीहड़ था। सन् १९२८ में बड़े जोर की वर्षा हुई। सैकड़ों यात्री मर गये। उनमें कुछ साधु-संत भी थे, जिनके पास जाड़े से बचने के लिए काफी कपड़े न थे। तभी से वह रास्ता बंद कर दिया गया। सरकार ने नया रास्ता बनवा दिया। इतना ही नहीं, यात्रियों की सुविधा के लिए चंदनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी के पड़ावों पर लकड़ी और टीन के कुछ घर भी बनवा दिये।

: ३ :

जोजपाल शाम के ६ बजे पहुंचे। सूर्य-देवता आराम करने की तैयारी कर रहे थे। हमें बताया गया था कि सर्दी वहां कम होगी, लेकिन जब टट्टुओं से उतरे तो उंगलियां ठंड के मारे अकड़ रही थीं और दांत बज रहे थे। अब हम ११,६०० फुट की उंचाई पर थे।

शेषनाग नदी के किनारे पर यहां एक छोटा-सा मैदान है। बसावट के नाम पर कुछ भी नहीं है। यात्री आगे शेषनाग पर ठहरते हैं, जहां कुछ सरकारी मकान हैं। लेकिन हम लोग तो यहीं ठहरने का इरादा करके चले थे और तंबू साथ लाये थे।

सामान के आते ही तंबू खड़ा किया गया। खा-पीकर जैसे ही लेटने को हुए कि बादलों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी। उसके बाद जो हुआ, उसको याद करके आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। बड़े जोर की बारिश आई और ओले पड़े। हमारा तंबू दोहरा था, इसलिए पानी का तो बचाव रहा, लेकिन ओलों की तड़तड़ाहट, बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की कड़कड़ाहट ने आधा खून सुखा दिया।

रात के बारह बजे तक तूफान बना रहा। हम आठ जने एक ही तंबू में सिमटे-सिकुड़े पड़े रहे। हमारे पास तो फिर भी तंबू था। टट्टू-वालों के पास तो कुछ भी नहीं था। उन्होंने सारी रात पहाड़ों की आड़ में बचाव कर-करके काटी। बेचारे टट्टुओं ने सारा प्रकोप अपनी पीठ पर सहा।

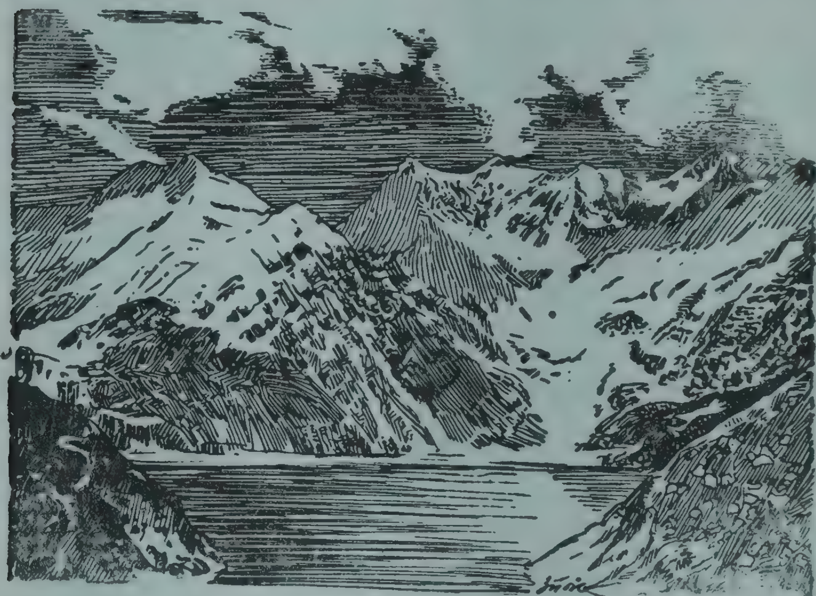
तूफान के थम जाने पर बाहर निकलकर आये तो देखते क्या हैं कि आकाश एकदम निर्मल है और भादों की तेरस का चांद अपनी चांदनी चारों ओर बिखेर रहा है। बरफ के मारे हर तरफ सफेद-ही-सफेद दिखाई देता था। सूनापन इतना कि एक-दूसरे की सांस भी सुनाई दे सकती थी। लेकिन शेषनाग नदी का गर्जन उस सूनेपन को भंग करने की लगातार कोशिश कर रहा था।

डर हुआ कि कहीं अगले दिन आगे का रास्ता बंद

न हो जाय। सारी रात आंखों में बिताकर सबेरे उठे और चाय पीकर कूंच कर दिया।

जोजपाल से निकलते ही एक मील लंबी कुट्टाघाटी आई। पिछली रात की वर्षा के कारण रास्ता काफी खराब हो गया था, पर हम कर क्या सकते थे! घाटी को पार करके चौपानों का मुकाम आया। वहां भेड़ों का एक रेवड़ मिला। कुछ उसमें बकरियां भी थीं। पेड़ और लताओं का यहां नाम नहीं।

चार मील चलकर शेषनाग पहुंचने में ढाई घंटे लगे। वहां पहुंचते-पहुंचते देखते क्या हैं कि काले-काले



शेषनाग का एक दृश्य

बादल उमड़-घुमड़कर आ रहे हैं और आसमान स्याह

पड़ता जा रहा है। हे भगवान, आगे क्या होगा ?

शेषनाग की शोभा अद्भुत है। कोई १३००० फुट की उंचाई पर वहां एक झील है। कहते हैं, इतनी ऊंचाई पर इतनी बड़ी झील दुनिया में शायद ही मिले। इसी झील में से शेषनाग नदी निकलती है। चारों तरफ बरफ से ढंके हुए पहाड़ हैं। सामने तीन चोटियां हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहलाती हैं।

यहां आकर सचमुच यात्री को लगता है कि वह किसी नई दुनिया में आ गया है। प्रकृति की छटा को देखकर वह एकबारगी सबकुछ भूल जाता है।

शेषनाग से एक मील पर वायुजन है। वहां हवा बड़ी तेज चलती है। कथा है कि किसी जमाने में इस पहाड़ पर एक राक्षस रहता था। वह वायु यानी हवा की तरह था। देवताओं को बहुत हैरान करता था। उससे तंग आकर एक बार सारे देवता शिवजी के पास गये और उनसे कष्ट दूर करने की प्रार्थना की। शिवजी ने कहा, "विष्णुजी के पास जाओ"। देवताओं ने क्षीरसागर पर जाकर विष्णु की उपासना की। भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर कहा, "आप चिंता न करें, मैं उस राक्षस का नाश कर दूंगा।"

तभी पाताल से शेषनाग प्रकट हुए, विष्णुजी ने उनपर सवार होकर कहा कि हे नागराज, तुम हजार

मुख से वायु का पान करो।

शेषनाग ने ऐसा ही किया। वह राक्षस समाप्त हो गया। तबसे इस स्थान का नाम शेषनाग पड़ गया। बाद में एक और राक्षस ने यहां उपद्रव किया। इंद्र ने अपने वज्र से उसका हनन किया। तबसे यह जगह वायुवर्जन कहलाई।

ये कथाएं तो धार्मिक लोगों के लिए हैं, लेकिन सचाई यह जान पड़ती है कि हवा की तेजी के कारण इस स्थान को यह नाम दिया गया होगा वायुजन की उंचाई तेरह हजार फुट से कुछ अधिक है।

पंचतरणी यहां से आठ मील है। जोजपाल से चलते समय हमने तय किया था कि रात को पंचतरणी पर ठहरेंगे। सो वायुजन पर अधिक न रुककर आगे बढ़े।

शेषनाग नदी अपने मायके में ही रह गई। लेकिन प्रकृति ने उसकी कमी खटकने नहीं दी। जिधर देखें, उधर ही दूध जैसे झरने। सर्दी के मारे बेचारों का नीचे पहुंचना भी मुश्किल। जरा बढ़े कि जम गये। कुछ बड़े झरने भी मिलते हैं। उन्हें पार करने के लिए मेले के दिनों में पुल बनाये जाते हैं, पर प्रकृति के कोप के आगे वे पुल टिक कहां पाते हैं! हम लोगों ने जगह-जगह झरनों के बरफ से उस शीतल जल को टट्टुओं के सहारे पार किया।

चंदनवाड़ी पर पहला बरफ का पुल देखकर हम लोगों को अपार आनंद हुआ था। यहां तो जगह-जगह पर वैसे पुल थे। ऐसा लगता था, मानों हम बरफ के देश में आ गये हैं।

पंचतरणी पहुंचने से पहले महागुनस की चढ़ाई आती है, जो बहुत ही कठिन है। हम लोगों ने जब वह शुरू की तो वर्षा हो रही थी। रास्ता इतना रपटीला हो गया था कि टट्टुओं के पैर हाथ-हाथ भर अपने आप सरक जाते थे। लगता था, गये। कोहरा इतना घना कि गज भर दूर की भी चीज दिखाई नहीं देती थी। हमारी टोली में स्त्रियां थीं, बच्चे थे। इतनी परेशानी होने पर भी किसीने हिम्मत न छोड़ी। सब आगे बढ़ते गये और एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते गये।

राम-राम करके वह चढ़ाई पूरी की। ऊपर चोटी पर पहुंचे तो टट्टू-वालों ने बताया कि हम अब १६ हजार फुट की उंचाई पर हैं। हमने पीछे मुड़कर देखा तो विश्वास नहीं होता था कि हम उस रास्ते को पार करके आये हैं।

बेचारे टट्टू पस्त हो गये थे। यहां पर एक घास होती है, जिसे खाते ही टट्टू मर जाते हैं और पीले रंग का करनफूल जैसा एक फूल होता है, जिसकी खुशबू से लोगों को बेहोशी-सी हो जाती है। फूलों का इतना

असर हो या न हो, लेकिन इतना तो है ही कि उंचाई के कारण भले-भलों को चक्कर आ सकते हैं।

पंचतरणी अभी पांच मील थी। टट्टुओं के थोड़ा सुस्ता लेने पर आगे बढ़े। रात के जगे थे, चढ़ाई से थके थे, पर मन उमंग से भरा था। चोटी पर पहुंचने के बाद बारिश थम गई थी। बादल फटने लगे थे।

कैसा स्थान है वह। हरियाली का नाम नहीं। पक्षियों की चहचहाट नहीं, आदमी का निशान नहीं। फिर भी वहां कुछ है, जो उस सबकी कमी को ही पूरा नहीं करता, उस भूमि को बहुत ही भव्य बना देता है।

हमारा टट्टू-वाला कहने लगा, "बाबूजी, आप लोग बड़ी हिम्मतवाले हैं, जो इन परेशानियों को झेलकर आगे बढ़ते जा रहे हैं। बहुतसे लोग तो शेषनाग से ही लौट जाते हैं। यह महागुनस की चढ़ाई तो बड़ी ही जानलेवा है। कभी-कभी बूढ़े-बड़े या कमजोर लोग जान से हाथ धो बठते हैं और टट्टुओं का भी दम टूट जाता है।"

उसकी बात सुनकर मैंने कहा, "भाई, जिसको भगवान बचाता है, उसको कोई नहीं मार सकता।"

: ४ :

महागुनस की चढ़ाई के बाद उतराई आती है। उस रास्ते को 'पोषपथ' कहते हैं। उसे पार करने के उपरांत

तीन नाले पड़ते हैं। तीनों का एक ही नाम है 'केलनाड़'। वहांपर एक घोड़ा मरा हुआ पड़ा था। टट्टू-वाले ने कहा–"देखा आपने ? सर्दी के मारे बेचारा अकड़ गया।"

आगे एक छोटी-सी चट्टान की ओर इशारा करके किसीने बताया कि यह 'नगारखां' है। पहले यात्री यहीं तक आते थे और यहींपर शिवजी के दर्शन होते थे। किसीने कहा, "नगारखां शिवजीका पहरेदार था।"

अब कुछ ही दूर पर पंचतरणी थी। यह पड़ाव सिंध नदी के किनारे पर है। यहां नदी की पांच धाराएं होने से उसका नाम 'पंचतरणी' पड़ा है। पहली धारा पर पुल था। शेष धाराओं में से दो सूखी थीं। लेकिन आखिरी काफी चौड़ी थी और पानी का बहाव भी उसमें बड़ा तेज था।

सवेरे के चले-चले शाम को साढ़े चार बजे पंचतरणी पहुंचे। ठहरने के लिए वहां टीन के कुछ घर बने हैं, लेकिन वे बड़ी ही बुरी हालत में थे। सामान आने पर हमने अपना तम्बू लगवाया।

पंचतरणी की उंचाई १२ हजार फुट के लगभग है। वह सारी घाटी 'सिंध की घाटी' कहलाती है! सुन्दरता की तो उसे खान ही समझिये। हर तरफ पहाड़ संतरी की भांति खड़े हैं और कलकल-निनाद करती हुई सिंध की धाराएं बहती हैं। सारी थकान

जाने कहाँ गायब हो जाती है !

पहाड़ों पर मौसम बहुत ही बेभरोसे का रहता है। जोजपाल में ओले पड़े, महागुनस की चढ़ाई में बारिश आई, लेकिन पंचतरणी पर ऐसी धूप फैली थी कि मजा आ गया। इस जगह की अपनी शोभा है। रात को जो छटा देखी, उसे शायद ही कभी भूला जा सके। आसमान एकदम साफ था और उसके बीच चौदस का गोल चांद अपनी पूरी शान से विराजमान था। उसकी चांदनी में बरफ का मुकुट पहने पहाड़ों की चोटियां कैसी लगती होंगी, इसका अंदाज बिना अपनी आंखों से देखे नहीं किया जा सकता। उधर सिंध की धाराओं और पास में बहते हुए झरनों से बड़ा ही मीठा संगीत उठ-उठकर आ रहा था। सरदी कड़ाके की थी, फिर भी हम लोग बड़ी देर तक नदी के किनारे घूमकर प्रकृति की उस माया को देखते रहे।

: ५ :

पंचतरणी से अमरनाथ कुल चार मील रह जाता है। यात्री शाम को यहां पहुंच जाते हैं। रात यहीं बिताकर बड़े तड़के बिना सामान के अमरनाथ चले जाते हैं और दर्शन करके फिर यहीं लौट आते हैं। सामान ले जाने और ले आने की परेशानी से एक तो बचत हो जाती है, दूसरे अमरनाथ में ठहरने को कोई जगह भी नहीं है।

हम लोगों ने भी यही किया। सबेरे बड़ी जल्दी उठकर चल दिये।

पंचतरणी से निकलते ही भैरोंघाटी आई। रास्ते के टेढ़े-मेढ़ेपन और खतरे में वह अबतक के सारे रास्ते से बाजी मार ले गई। पहाड़ बलुआ और रास्ता ढलवां। कदम-कदम पर लगता था कि सिंध माई बाहें पसारकर स्वागत करने को तैयार है और मौत मुसकराकर देख रही है।

भैरोंघाटी का उतार-चढ़ाव वास्तव में बड़े कसाले का है। यात्रियों की वह आखिरी कसौटी है। पर सबेरे का समय होने से रास्ता बहुत अखरता नहीं और थकान भी अधिक नहीं होती।

इस घाटी को पार होते ही अमरनाथ की सुन्दर घाटी शुरू हो जाती है। यहां चारों ओर बरफ का राज है। सामने, इधर-उधर, पीछे, जिधर देखो बरफ-ही-बरफ काफी दूर तक बरफ पर चलना पड़ता है। बड़ा आनंद आता है। पर खतरा भी कम नहीं होता। नुकीली लाठी को बरफ में गाड़-गाड़कर, पैर जमा-जमाकर चलना होता है। बरफ जहां कच्ची होती है, वहां पैर धंस जाते हैं। जहां पक्की होती है, वहां जूते फिसलते हैं। नीचे नदी की धारा बहती है। एक डर यह भी रहता है कि कहीं बरफ की तह पतली या कमजोर हुई और टूट गई तो उसके साथ ही

आदमी भी नीचे। फिर तो पता भी लगना मुश्किल। पर भगवान की दया से ऐसा शायद ही कभी होता हो। टट्टू-वालों को बरफ की अच्छी पहचान रहती है।

अमरनाथ की घाटी में घुसते ही अमरनाथ की गुफा दिखाई देने लगती है। तब यात्री का मन होता है कि दौड़कर वहां पहुंच जाय, लेकिन बरफ पर तेज चलना खतरे से खाली नहीं होता।



बरफ पर हमारी टोली

गुफा से कुछ गज पर अमरगंगा बहती है। सबसे पहले यात्री यहींपर रुक कर स्नान करते हैं, फिर पूजा करने ऊपर जाते हैं। अमरगंगा के जल में गंगोटी जैसी

सफेद मिट्टी होती है। प्रसाद के रूप में लोग उसे साथ में ले आते हैं।

वैसे तो सभी पहाड़ी नदियों का पानी ठंडा होता है, लेकिन अमरगंगा के पानी की क्या कहें ! उसमें हाथ डालते ही सुन्न हो जाता है। फिर भी लोग उसमें नहाते हैं। असल में परेशानी शुरू में ही थोड़ी-बहुत होती है, फिर तो देह ठंढ का सह लेती हैं।

नदी से थोड़ी उंचाई पर पहाड़ में एक विशाल गुफा है। यही 'अमरनाथ की गुफा' कहलाती है और इसीके दर्शन के लिए यह कठिन यात्रा की जाती है। यह जगह १२७२६ फुट की उंचाई पर है। गुफा की लम्बाई ५० फुट, चौड़ाई ५५ फुट और उंचाई ४५ फुट है। पहलगाम से यहांतक बीसियों पहाड़ मिलते हैं, लेकिन उनमें कहीं भी कोई गुफा दिखाई नहीं देती। अचरज होता है कि इतनी बड़ी कंदरा यहां कैसे अपने आप बन गई ?

लेकिन इससे भी अधिक अचरज तब होता है, जबकि भीतर जाकर एक विचित्र चीज दिखाई देती है। अंदर दाईं ओर की दीवार में एक गोल-सा कोना है। यहींपर अपने आप बरफ से एक बहुत बड़ी शिव-पिण्डी बन जाती है। उसके सामने एक तरफ को पार्वती की और दूसरी तरफ गणेश की मूर्तियां बनती हैं। कहते हैं, सावन की पूरनमासी

के दिन ये सब मूरतें अपने पूरे रूप में दिखाई देती हैं। बाद में जैसे-जैसे चंदा का आकार घटता जाता है, ये मूरतें भी घटती जाती हैं और अंत में बरफ का एक ढेर-भर रह जाती हैं। हम वहां भादों की पूरनमासी को पहुंचे थे, एक महीना देर से। तबतक वे मूर्तियां गल चुकी थीं और उनकी जगह बरफ का ढेर रह गया था।

बड़ी मानता है इस जगह की। सब धर्मों के लोग यहां आते हैं। हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई



अमरनाथ की गुफा और शिव-दर्शन

आदि-आदि। भारत से बाहर के लोग भी आते हैं।

गुफा इतनी बड़ी है कि सैकड़ों लोग उसमें एक

साथ आ सकते हैं। उसका ढाल ड्योढ़ी की ओर है और उसके ऊपर एक बहुत ऊंचा पहाड़ है। काश्मीर की सरकार ने यात्रियों की सुविधा के लिए लोहे की छड़ियों की रोक लगवादी है, जिससे गिरने का डर न रहे और लोग अच्छी तरह से दर्शन कर सकें। यहां सारे पहाड़ों के ऊपर बरफ दिखाई देती है, पर गुफा के ऊपर जो पहाड़ है, उसपर बरफ का नाम भी नहीं है।

हम पहले ही बता चुके हैं कि इधर के पहाड़ सूखे हैं, उनपर हरियाली नहीं है। जीव-जंतु भी देखने में नहीं आते, लेकिन गुफा की छत में दो कबूतर बराबर रहते हैं। उन्हें देखकर हम बड़ी देर तक सोचते रहे कि जहां खाने-पीने को कुछ भी नहीं मिलता और सर्दी से सब-कुछ जम जाता है, ये कबूतर वहां कैसे रहते होंगे !

हमारे टट्टू-वाले ने बताया कि मलिक नाम का एक मुसलमान था, जो सबसे पहले यहां आया था और उसीने इस जगह की खोज की थी। वह कब आया, इसका पता नहीं। कोई तीस साल से टट्टू आने-जाने लगे हैं। मेलों के दिनों में बहुत-से लोग पैदल आते हैं। कुछ डांडियों पर। रास्ता सिर्फ चार महीने खुला रहता है—असाढ़ से क्वार तक। बाकी के दिनों में बरफ से ढंका रहता है।

हमारी धर्म की किताबों में इस जगह की बड़ी

महिमा बखानी गई है। लिखा है कि यहींपर महादेव ने पार्वती को अपने अमर होने की कथा सुनाई थी। इतना ही नहीं, यह भी बताया गया है कि यहां के रास्ते में बहुत-से तीरथ हैं, यहां की यात्रा सवन में करनी चाहिए और यहां आने से बड़ा फल मिलता है।

: ६ :

दर्शन करके हम लोग बाहर आये और चारों ओर के भव्य दृश्यों को देखने लगे। बाईं ओर को दूर बरफ से पूरी तरह ढंका एक पहाड़ सूरज की सुनहरी किरणों से चमक रहा था। किसीने बताया कि वह कैलास है। कैलास ! हमारा महान तीर्थ ! वहां से काफी दूर होगा वह, लेकिन खुले मौसम में, चमकती धूप में, ऐसा लगता था, मानों बिलकुल पास हो। अमरनाथ के साथ उसके भी दर्शन करके मन बड़ा पुलकित हुआ।

इसमें कोई शक नहीं कि अमरनाथ की यात्रा बहुत ही शांति और आनंद देनेवाली है। देश के दूर-पास के बहुत-से स्थानों से धार्मिक लोग वहां आते हैं और अमरनाथ के दर्शन करके उन्हें लगता है, जीवन सफल हो गया। बहुत-से ऊंचे संत-महात्मा भी वहां गये हैं। स्वामी विवेकानन्द तो शिवलिंग की पवित्रता से मुग्ध हो गये और उनके दिल पर इतना गहरा असर

पड़ा कि वह मूर्च्छित-से हो गये। स्वामी रामतीर्थ के बारे में लिखा है कि जब वह अमरनाथ की यात्रा करके लौटे तो उनका हृदय शांति और पवित्रता से भरा हुआ था।

पुर्तगाल की एक महिला ने तो यहांतक लिखा है कि मैं अपने जीवन में अमरनाथ जैसी पवित्र, शांति देने-वाली और कभी न भूलनेवाली दूसरी जगह कहीं नहीं देख सकूँगी।

एक जापानी यात्री कहते हैं, "मैंने सारी दुनिया की सैर की है, पहाड़ों और जंगलों में खूब घूमा हूं, लेकिन काश्मीर में अमरनाथ की गुफा में जाकर दिल को जो शांति मिली, वह कहीं नहीं मिली।"

हमारी टोली में सभी तरह के लोग थे। कुछ धार्मिक थे, कुछ प्रकृति को प्यार करनेवाले। सबने अनु-भव किया कि इस यात्रा में उन्होंने बहुत-कुछ पाया है। बच्चे तो बहुत ही खुश थे। छोटी उम्र में ही उन्होंने इतनी बड़ी यात्रा का पुण्य ले लिया।

जिस रास्ते गये थे, उसी रास्ते लौट आये। लौटते में रात को शेषनाग में ठहरे। जोजपाल का बारिश और ओलोंवाला अनुभव फिर नहीं हुआ। भगवान की कृपा समझिये या प्रकृति की दया, लौटते में मौसम बराबर साफ रहा।

काश्मीर के बारे में एक कवि ने लिखा है :

गर फ़िरदौस बर रूए जमीं अस्त,
हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त।

इस धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो वह यहींपर (काश्मीर में) है, यहींपर है, यहींपर है।

यह बात कवि के हृदय से उठी थी, लेकिन अमरनाथ जो भी जायगा, वह कवि हो या न हो, एक बार इस सचाई को अपने दिल में अवश्य अनुभव करेगा।

●

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

आत्मकथा	(गांधीजी)	४·००	भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	०·२५
प्रार्थना-प्रवचन : २ भाग	,,	५·५०	राजघाट की संनिधि में	,,	०·६२
गीता माता	,,	४·००	विचार-पोथी	,,	१·००
पंद्रह अगस्त के बाद	,,	१·५०, २·००	सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	०·२५
धर्मनीति	,,	१·५०, २·००	जमाने की मांग	,,	०·१२
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३·५०	उपनिषदों का अध्ययन	,,	१·००
मेरे समकालीन	,,	५·००	मेरी कहानी	(नेहरू)	८·००
आत्म-संयम	,,	३·००	,, (संक्षिप्त)	,,	२·५०
गीता-बोध	,,	०·५०	हिंदुस्तान की समस्याएं	,,	२·००
अनासक्तियोग	,,	१·५०	लड़खड़ाती दुनिया	,,	२·००
ग्राम-सेवा	,,	०·३७	राष्ट्रपिता	,,	२·००
मंगल-प्रभात	,,	०·३७	राजनीति से दूर	,,	२·००
सर्वोदय	,,	०·३७	विश्व-इतिहास की झलक	(सं)	५·००
नीति-धर्म	,,	०·३७	सं० हिंदुस्तान की कहानी	,,	२·५०
आश्रमवासियों से	,,	०·३७	नया भारत	,,	०·२५
हमारी मांग	,,	१·००	आजादी के आठ साल	,,	०·२५
एक सत्यवीर की कथा	,,	०·२५	गांधीजी की देन	(रा० प्रसाद)	१·५०
आत्मकथा (संक्षिप्त)	,,	१·००, १·५०	आत्मकथा	,,	८·००
हिंद-स्वराज्य	,,	०·७५	महाभारत-कथा	(राजाजी)	५·००
अनीति की राह पर	,,	१·००	कुब्जा-सुंदरी	,,	२·००
बापू की सीख	,,	०·५०	शिशु-पालन	,,	०·५०
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	,,	१·१२	दशरथनंदन श्रीराम	,,	६.००
आज का विचार (दो भाग)		०·७५	मैं नहीं भूल सकता	(काटजू)	२·५०
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	,,	१·७५	कारावास-कहानी	(सु० नै०)	१०·००
गांधीजी ने कहा था (९ भाग)		२·२५	गांधी की कहानी	(लु० फि०)	४·००
शांति-यात्रा (विनोबा)		१·५०	भारत-विभाजन की कहानी		४·००
विनोबा के विचार : २ भाग		३·००	बापू के चरणों में		२·५०
गीता-प्रवचन	(विनोबा)	१·५०	इंग्लैंड में गांधीजी		२·००
जीवन और शिक्षण	,,	२·००	बा, बापू और भाई		०·५०
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१·००	गांधी-विचार-दोहन		१·५०
ईशावास्यवृत्ति	,,	०·७५	सत्याग्रह-मीमांसा		३·५०
ईशावास्योपनिषद्	,,	०·१२	बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१·००
सर्वोदय-विचार	,,	१·१२	संत-सुधासार (संक्षिप्त)	,,	६·००
स्वराज्य-शास्त्र	,,	०·७५	श्रद्धाकरण	,,	१·००
गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	०·३७	अयोध्याकांड	,,	१·००

भागवत-धर्म	(ह० उ०)	५·५०
श्रेयार्थी जमनालालजी (सं)	,,	२·००
स्वतंत्रता की ओर	,,	४·००
बापू के आश्रम में	,,	१·००
मानवता के झरने	(मावलंकर)	१·५०
बापू	(घ० बिड़ला)	२·००
रूप और स्वरूप	,,	०·६२
डायरी के पन्ने	,,	१·००
ध्रुवोपाख्यान	,,	०·२५
स्त्री और पुरुष	(टाल्स्टाय)	१·००
मेरी मुक्ति की कहानी	,,	१·५०
प्रेम में भगवान	,,	२·००
जीवन-साधना	,,	१·२५
कलवार की करतूत	,,	०·२५
हमारे जमाने की गुलामी	,,	०·७५
बुराई कैसे मिटे ?	,,	१·००
बालकों का विवेक	,,	०·५०
हम करें क्या ?	,,	३·५०
धर्म और सदाचार	,,	१·२५
अंधेरे में उजाला	,,	१·५०
ईसा की सिखावन	,,	१·००
कल्पवृक्ष	(वा० अग्रवाल)	२·००
लोक-जीवन	(कालेलकर)	३·५०
साहित्य और जीवन	(चतुर्वेदी)	२·००
कब्ज	(म० प्र० पोद्दार)	१·५०
हिमालय की गोद में	,,	२·००
कहावतों की कहानियां	,,	२·००
राजनीति प्रवेशिका	(लास्की)	१·००
जीवन-संदेश	(ख० जिब्रान)	१·२५
अशोक के फूल	(ह० प्र० द्विवेदी)	३·००
जीवन-प्रभात	(कालेलकर)	५·००
कांग्रेस का इतिहास	(संक्षिप्त)	५·००
पंचदशी		१·००
सप्तदशी		२·००
रीढ़ की हड्डी		१·५०
अमिट रेखाएं		३·००
तामिल-वेद	(तिरुवल्लुवर)	१·५०
थेरी-गाथाएं		१·५०
बुद्ध और बौद्ध साधक		१·५०
हमारे गांव की कहानी		१·५०
खादी द्वारा ग्राम-विकास		०·७५
साग-भाजी की खेती		३·००
ग्राम-सुधार		१·२५
पशुओं का इलाज		०·५०
चारादाना		०·२५
रामतीर्थ-संदेश	(३ भाग)	१·१२
रोटी का सवाल	(क्रोपाटकिन)	३·००
नवयुवकों से दो बातें	,,	०·३७
पुरुषार्थ	(डा० भगवानदास)	६·००
काश्मीर पर हमला		२·००
शिष्टाचार		०·५०
तट के बंधन	(वि० प्रभाकर)	२·००
भारतीय संस्कृति	(साने गुरुजी)	३·५०
आधुनिक भारत		५·००
फलों की खेती		२·५०
मैं तंदुरुस्त हूं या बीमार ?		०·५०
भा० नवजागरण का इतिहास		३·००
गांधीजी की छत्रछाया में		२·५०
भागवत-कथा		३·५०
जय अमरनाथ		१·५०
हमारी लोक-कथाएं		१·५०
संस्कृत-साहित्य-सौरभ (३३ पुस्तकें) प्रत्येक		०·३७
समाज-विकास-माला (८९ पुस्तकें) प्रत्येक		०·३७
कृषि-ज्ञान-कोष	(डा० व्यास)	४·००
प्रकाश की बातें		१·५०
ध्वनि की लहरें		१.५०
गरमी की कहानी		१·५०
धरती और आकाश		१·५०
समुद्र के जीव-जंतु		१·५०
नवीन यात्रा	(मनोज बसु)	२·००



सैंतीस नये पैसे